# मानव एकता दिवस

(तर्ज : मेरे दोस्त किस्सा ये क्या…)

बाबा गुरबचन ने किया ये करम ।
सजाया मिशन ये संवारा मिशन ।

निर्धन था या कोई धनवान था ।
उनके दिल मे सबका सन्मान था -2
उस बागवां ने - 2 खिलाया चमन, सजाया मिशन...

रोतो को तो वो हँसाते रहे ।
गिरतों को तो वो उठाते रहे -2,
जख्मो पे सबके -2 लगाया मरहम, सजाया मिशन...

सींचा मिशन को देके लहू ।
दिलाया है हक जीने का सुकूं ।
देके खुशी और -2 मिटाये थे गम, सजाया मिशन...

दहेज बिना हो हर शादियां,
घरो की न होंगी ऐसे बरबादियाँ
रहे चाहना तेरी -2 'आकाश' बचन, सजाया मिशन...